THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, ISSN: 2632-7597 Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

रागांग राग वर्गीकरण

Dr. Anamika Rani , Assistant Professor of Music (V)
Pt. C.L.S.Govt. College, Karnal

विद्वानों के अनुसार, पंडित विष्णु नारायण भातखंडे के शिष्य स्वर्गीय नारायण मोरेश्वर खरे ने सभी रागों को 30 रागांगों में विभाजित किया था। सभी रागों का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद, उन्होंने 30 स्वर समूहों का चयन किया: जैसे ग मा रे सा या मा गा रे सा आदि। इन मुख्य स्वर समूहों का नाम उस राग के नाम पर रखा गया जिसमें वे सबसे प्रमुख थे, उन्हें उसी राग के नाम से पुकारा जाता था। इस प्रणाली में, सभी रागों में तीस मुख्य राग प्रमुख माने जाते हैं।

इन्हें रागांग कहते हैं। अन्य सभी रागों को इन तीस रागों के अंतर्गत रखा गया है। इस वर्गीकरण में स्वर-साम्य (स्वरों की समानता) की अपेक्षा स्वरूप-साम्य (रूप की समानता) पर अधिक बल दिया गया है। प्रत्येक रागांग की अपनी एक विशिष्ट पहचान और छवि होती है, जो उस अंग (अंग/अंग) के सभी रागों में पाई जाती है, या कुछ प्रमुख रागों में ऐसे स्वर समूह होते हैं जो उनकी स्वतंत्र छवि और पहचान बनाते हैं। ऐसे स्वतंत्र अंग रागों को प्रमुख राग माना जाता है।

रागांगों में पहले स्वर समूह का नाम बिलावल और दूसरे का नाम भैरव रागंग था। रागांगों की अधिक संख्या तथा कुछ जटिल वर्गीकरण के कारण यह लोकप्रिय नहीं हो सका। तीस प्रमुख राग हैं-भैरव, भैरवी, बिलावल, कल्याण, खमाज, पूर्वी, काफी, मारवा, तोड़ी, कणाद, मल्हार, सारंग, बागेश्री, ललित, असावरी, भीमपलासी, पीलू, कामोद आदि।

राग-रागांग वर्गीकरण की उत्पत्ति और विकास

आचार्य मतंग के समय से हमें देशी रागों के चार वर्गीकरणों के प्रमाण मिलते हैं: रागांग, भासंग, क्रियागांग और उपांग। संगीत रत्नाकर के टीकाकार सिंह भूपाल

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, ISSN: 2632-7597 Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

और कल्लिनाथ ने इस संदर्भ में मतंग के मत का उल्लेख कुछ पाठगत भिन्नताओं के साथ किया है। जिन रागों में केवल ग्राम रागों की छाया होती है, उन्हें 'रागंग राग' कहते हैं। जिन रागों में स्वर समूहों में राग की छाया दिखाई देती है, जिसे सुनकर राग के पारखी यह समझ जाते हैं कि इस स्वर समूह में कोई विशेष राग झाँक रहा है - वही छाया है। मध्यकाल में इस सिद्धांत का और विस्तार हुआ। संगीत पारिजात आदि ग्रंथों में एक ही राग के अनेक रूपों में इस सिद्धांत का प्रभाव दिखाई देता है। बाद में पंडित भावभट्ट ने राग भेद वर्गीकरण के रूप में इसका उल्लेख किया, जिसमें बिलावल, कल्याण आदि 18 भेदों से 148 रागों के नाम उपलब्ध होते हैं । रागांग वर्गीकरण का प्रभाव मेलसिद्धान्त के अन्तर्गत रागों को वर्गीकृत किए जाने के पश्चात् भी दिखाई देता है. पण्डित भातखण्डे एक मेल के अन्तर्गत अनेक रागांगों का समावेश करते हैं. मेल राग वर्गीकरण पद्धति में भी इस वर्गीकरण का प्रबल प्रभाव है. इस प्रबलता का प्रमुख कारण यही है कि राग की सामान्य पहचान तो स्वरों के द्वारा हो जाती है, परन्तु सूक्ष्म पहचान विशिष्ट स्वरसमूहों के माध्यम से होती है. किसी स्वर-समूह की यही मुख्य पहचान 'रागांग' कहलाती है ।

उत्तर भारतीय संगीत में ऐसे अंग प्रमुख राग, जिनके स्वतन्त्र अंग सर्वमान्य है तथा जिनकी छाया या अंग प्रभाव दूसरे रागों में दिखाई देते हैं अथवा भारतीय संगीत में प्रचलित प्रमुख।

रागांगों के आधार पर भारतीय संगीत के रागों का वर्गीकरण इस प्रकार है

बिलावल अंग इस राग का प्रमुख अंग इस प्रकार है पूर्वांग में ग रे ग प म ग म रे सा उत्तरांग में ग प ध ध नि सां। उत्तरांग में चैवत स्वर निषाद स्वर का कण लगाते हुए गाया जाता है तथा पूर्वांग में गान्धार वक्र रहता है। बिलावल थाट के सभी रागों में उपयुक्त पूर्वांग व उत्तरांग के स्वर समूहों में से किसी राग में एक अथवा किसी राग में दोनों अंगों का उपयोग किया जाता है। इस अंग के अन्य प्रमुख राग–अल्हैया बिलाबल, यमनी बिलाबल, देवागिरी बिलाबल, शुक्ल बिलाबल हैं।

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, ISSN: 2632-7597 Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

कल्याण अंग यमन का पूर्वांग में प्रमुख अंग–नि रे ग रे सा और उत्तरांग में म ध नि ध प ग प ध प रे सा और सा ध प ग इस राग का प्रमुख अंग है। इस राग के प्रमुख राग यमन और शुद्ध कल्याण हैं। इस अंग के अन्य प्रमुख रागों में, पूरिया कल्याण, यमन कल्याण, जैत कल्याण, श्याम कल्याण आदि हैं।

काफी अंग काफी अंग भारतीय संगीत का प्रमुख थाट है। काफी थाट अथवा अंग का काफी प्रमुख राग है। काफी राग के प्रमुख अंग इस प्रकार है–म प ध म ग श रे–सा, रे ग म ग रे ग रे सा–, सा रे ग ग म प काफी राग सस, रेरे, गग, मम, पप, स्वर समूह से सहज ही पहचाना जा सकता है। काफी अंग के अन्य प्रमुख रागों में सैन्धवी या सिन्दूरा, बरवा, मिश्रकाफी और पीलू आदि हैं। इस अंग के अन्य प्रमुख रागों में से काफी, धनाश्री, कान्हड़ा, मल्हार और सारंग इन पाँच अंगों को रखा गया है।

धनाश्री अंग धनाश्री मूलतः काफी थाट का राग है और साथ ही काफी अंग के अन्तर्गत आने वाले पाँच रागांगों में से एक अंग भी है। इसके आरोह में ऋषभ और धैवत स्वर वर्ज्य है। अतः इसकी जाति औड़्व-सम्पूर्ण है। इस राग में 'प ग' की संगति से राग स्पष्ट हो जाता है। भीमपलासी एवं धनाश्री समप्राकृतिक राग है, परन्तु भीमपलासी में मध्यम तथा धनाश्री में पंचम स्तर का अधिक प्रयोग किया जाता है। इसी भेद से इन रागों की पहचान अलग-अलग हो जाती है। इस राग का आरोह सा ग म प नि सा और अवरोह-सां नि ध प म ग रे सा है। धनाश्री अंग के मुख्य रागों में भीमपलासी, हंसकिंकणी पद्दीपिकी, घानी तथा पददीपि आदि का नाम प्रमुख हैं। धनाश्री राग के प्रमुख अंग इस प्रकार हैं, सा–प नि सा ग रे–सा, ग म–प, म प नि–ध प, धपमप ग–सा ग म प ग–प म ग रे सा।

सारंग अंग वृन्दावनी सारंग का प्रमुख अंग पूर्वांग उत्तरांग में इस प्रकार है–सा–नि सा–रे रे, रे प म प रे, म रे नि–सि सा। सारंग का प्रमुख राग वृन्दावनी सारंग

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, ISSN: 2632-7597 Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

को माना जाता है। सारंग अंग के प्रमुख रागों में वृन्दावनी सारंग मधुपाद सारंग, शुद्ध सारंग, सामन्त सारंग, मियाँ की सारंग।

कान्हड़ा अंग श्रीपाद बन्धोपाध्याय के अनुसार, कान्हड़ा अंग में 'नि प–समगति हो इस अंग को पहचान मानी जाती है। कान्हड़ा अंग का प्रमुख स्वर-समूह नी ध–प, रा ग म रे सा है। यह स्वर समूह कान्हड़ा अंग के सभी रागों में पाया जाता है। इस अंग के प्रमुख राग दरबारी कान्हड़ा, नायकी, सुहा, सुहाहा तथा जयजयवन्ती है।

मल्हार अंग इस अंग के प्रमुख राग शुद्ध मल्हार, मेघ मल्हार तथा मियाँ मल्हार हैं तथा इन तीनों को छाया से मल्हार के अनेक प्रकार बनते हैं। शुद्ध मल्हार पारिजात मल्हार या मेल के नाम से वर्णित है। सम्भवतः प्राचीन मल्हार को सुरक्षित रखने की दृष्टि से मल्हार के साथ शुद्ध शब्द लगा दिया गया है। शुद्ध मल्हार का 'ग नि' वर्जित औड़व का रूप बहुत कम प्रचलित है, परन्तु इसका प्रमुख स्वर समूह अथवा अंग इस प्रकार हैं- रे म प, म नि म प, नि ध नि सां। खमाज अंग विनायक नारायण पटवर्धन के अनुसार खमाज राग का मुख्य अंग-गमपधनिधपधगमग है। इस अंग का प्रमुख राग खमाज है। यह एक लोकप्रिय राग है। इसका स्वर समूह इस प्रकार है ध नि प ध नि सां सांनिधप-धम ग। इस अंग के अन्य राग झिझोटी, तिलंग, रागेश्री, दुर्गा, मोड आदि हैं। भैरव अंग इसका अंग, प्रधान राग, भैरव है। पूर्वांग में मुख्य अंग-गम रे गरे सा और उत्तरांग में गमघघनिप-है। अन्य प्रमुख रागों में अहीर, भैरव, आनन्द भैरव, बैरागी भैरव, नट भैरव आदि हैं। गौरी अंग गौरी अप्रचलित और अनेक रूप वाली है। यह भैरव तथा पूर्वी मेल में गाई जाती है। गौरी का प्रमुख अंग-सा रे नि-सा-रे ग-रे गमग रे ग-रे सा है। इसमें गान्धार और निषाद को बढ़ाकर सायंकालीन अन्य रागों से अलग किया जाता है। गौरी के मेल से ललिता गौरी, आसा गौरी तथा भैतीगौरी आदि प्रकार बनते हैं। पुराने ग्रन्थों में इसके स्वर भैरव मेल के हैं। सायंकाल में तीव्र-मध्यम की प्रधानता रहती है। अतः शुद्ध मध्यम के स्थान पर तीव्र-मध्यम

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, ISSN: 2632-7597 Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

के प्रयोग से पूर्वी मेल की गौरी का निर्माण होता है। श्री अंग इसका रागांग प्रमुख राग श्री है। श्री का प्रमुख अंग है-रेरे प, घ प, म रे ग रे सा गौरी के भेदों में कहीं-कहीं श्री अंग दिखाई पड़ती है। त्रिवेणी श्री अंग का प्रमुख सायंकालीन राग है। श्री टंक या टंकी त्रिवेणी से मिलता-जुलता राग है। तोड़ी अंग सा रे ग रे ग रे सा तोड़ी का मुख्य अंग है। विनायक पटवर्धन के अनुसार इस राग का प्रमुख स्वर समूह अथवा अंग नि धु, नि रे ग म रे ग, रे सा। यह राग केवल तीन स्वरों सा रे ग से स्पष्ट हो जाता है। इस अंग के राग गुर्जरी तोड़ी, भूपाल तोड़ी, विलासखानी तोड़ी तथा बहादुर तोड़ी आदि हैं। मारवा अंग रे ग में ध, ध म ग रे यह मारवा का प्रमुख अंग हैं। पूरिया को भी कुछ लोग मारवा अंग का राग मानते हैं, परन्तु पूरिया में केवल मारवा के स्वर हैं, मारवा अंग नहीं। पूरिया एक स्वतन्त्र अंग माना जाता है। भटियार को कुछ लोग मारवा अंग का राग मानते हैं, परन्तु इस राग के अनेक गीतों में, मारवा का अंग बहुत कम दिखाई देता है। वास्तव में भटियार अनेक रागांशों का मिश्रण हो ऐसे रागों को किसी अंग विशेष में समेटना कठिन है। मारवा अंग का राग बहुत कम पाए जाते हैं।

भैरवी अंग इस अंग का प्रमुख राग भैरवी है। किसी भी स्वर से प्रारम्भ करके इच्छानुसार स्वर विस्तार करने से भी भैरवी दिखाई देती है। स्वभावतः यह सोधा, मधुर, सरल व बहुप्रचलित राग है। ऋषभम को बढ़ाने से भैरवी राग अधिक निखरता है। इसका प्रमुख अंग सा रे सा-, सा रे ग, म ग म प म ग रे सा सि सा रे ग म है। आसावरी अंग- इस अंग का प्रमुख स्वर समूह म प ध म प ध ग म ग रे सा है। देशी, जौनपुरी, गन्धारी तथा देव गान्धार आदि रागों का इसमें सहज ही समावेश हो जाता है। कुछ कोमल ऋषभ आसावरी को तोड़ी भी कहते हैं।

पूर्वी अंग - पूर्वी थाट का आश्रय राग है। इस थाट में रे, ध कोमल तथा म तीव्र और बाकी स्वर शुद्ध होते हैं। इस थाट का आश्रय राग होने के कारण पूर्वी में भी इन्हीं स्वरों का प्रयोग किया जाता है। पूर्वी अंग के प्रमुख राग हैं - पूरिया धनाश्री,

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, ISSN: 2632-7597 Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

जैतश्री, हंस नारायणी तथा देव आदि। पूर्वी राग का प्रमुख स्वर समूह-नि सा ग म रे ग रे सा□ विनायक नारायण पटवर्धन के अनुसार इस राग का प्रमुख अंग-प ग म रे म ग. म है सा है।

केदार अंग यह कल्याण थाट का एक प्राचीन राग है। इस राग में दोनों मध्यम लगते हैं, परन्तु तीव्र मध्यम का प्रयोग आरोह में केवल पंचम के साथ किया जाता है। इस राग का वादी शुद्ध मध्यम एवं संवादी षड्ज है। इसका आरोह इस प्रकार है-सा म, में प, ध प नि ध सां और अवरोह इस प्रकार है- सा नि ध प, म प ध प म रे-सा।

इस अंग के मुख्य राग इस प्रकार है- मलुहाकेदार, जलधरकेदार, बसंतकेदारबहार आदि।

ललित अंग ललित मूल रूप से मारवा थाट का राग है। इस राग में पंचम स्वर को वर्ज्य करते हैं। अतः इसकी जाति पाड्व-पाड्व है। इस राग की मुख्य विशेषता यह है कि इस राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग एक साथ ही किया जाता है। इसका मुख्य स्वर समूह इस प्रकार है- ति रे ग म र्म म तथा ध म म ग।

हिण्डोल अंग हिण्डोल मूलतः कल्याण मेल का राग है। इस राग में ऋषभ और पंचम स्वर वर्ज्य हैं। अतः इसकी जाति औड्व-औड्व है। इस राग का वादी स्वर चैवत और संवादी स्वर गान्धार है। इसका आरोह सा ग म ध नि सां तथा अवरोह सा नि ध म ग स इस प्रकार है। इस राग का मुख्य स्वर समूह-ग सा म ग सा है।

कामोद अंग कामोद कल्याण थाट का राग है। इस राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। वादी स्वर पंचम और संवादी स्वर ऋषभ है। इस राग को रात्रि के प्रथम प्रहर में गाया-बजाया जाता है। इस राग के आरोह में तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है। आरोह में गान्धार का वक्र प्रयोग किया जाता है। इस राग के अंग में रे

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, ISSN: 2632-7597 Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

प' की संगति वैचित्र्यपूर्ण एवं रंजकता से युक्त होती है। इस अंग का मुख्य स्वर समूह-सा म रे प है।

बिहाग अंग बिहाग बिलावल थाट का राग है। गान्धार स्वर इस राग में मन्द्र तथा अंश स्वर माना जाता है। इस राग में व्यवहार में दोनों माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। इस राग में निषाद स्वर का लगाव वैचित्र्यपूर्ण एवं रागवाचक है। आजकल यह राग एक स्वतन्त्र अंग के रूप में जाना जाता है। इस अंग के मुख्य राग- सावनी, बिहगड़ा, नट बिहाग तथा पट बिहाग आदि है □

जयजयवन्ती जयजयवन्ती खमाज थाट का राग है. इस राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर धैवत है. इसको रात्रि के द्वितीय पहर में गाया-बजाया जाता है. इसमें दोनों गंधार एवं दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है । पण्डित भातखण्डे का मानना है कि यह राग सोरठ और देश अंगों से युक्त है. यह राग भी अपनी विशिष्टता के कारण आज स्वतन्त्र अंग के रूप में जाना जाता है. इस राग का मुख्य अंग अथवा स्वर समूह-रे ग रे सा, सा ध, नि रे.

देस अंग यह खमाज थाट का राग है. इसमें दोनों निषाद तथा शेष स्पष्ट शुद्ध लगते हैं. इस राग के आरोह में गान्धार और धैवत वर्ज्य है. वादी ऋषभ और संवादी पंचम है. इस राग को रात्रि के दूसरे पहर में गाते हैं. इसका मुख्य अंग अथवा स्वर समूह-रे म प, नि ध प, प ध म ग रे, ग सा है ।

जोग अंग जोग काफी थाट का राग है□ इस राग में दोनों गान्धार प्रयुक्त होते हैं। निषाद कोमल तथा ऋषभ और चैवत स्वर वर्ज्य है। इस राग के आरोह में शुद्ध तथा अवरोह में कोमल गान्धार का प्रयोग किया जाता है। इस राग पर कई रागों की छाया सहज ही आने लगती है। अतः इस राग को सावधानीपूर्वक गाना अपेक्षित है। इस राग का मुख्य स्वर समुदाय अथवा अंग-गमप-नि सांनि पमग, म, प, ग प म-सा, नि, नि सा ग-है।

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, ISSN: 2632-7597 Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

इस अंग के मुख्य राग मालकौंस, जोग-कौस, कौसी कान्हड़ा तथा मधु कौस आदि है।

इसी प्रकार अन्य कुछ ऐसे राग हैं, जो अपने वैशिष्ट्य के कारण विशिष्ट अंग के रूप में जाने जाते हैं; जैसे- सोरठ अंश व पहाड़ी आदि, किन्तु नारायण मोरेश्वर खरे ने केवल 26 रागांगों के आधार पर ही रागों का वर्गीकरण किया था। बाकी के ये कुछ अंग अपनी विशिष्टता के कारण ही प्रचार में आए हैं। अतः आधुनिक काल में उपरोक्त लगभग 30 रागांग प्रचार में है।

संदर्भ ग्रंथ

1भारतीय संगीत शास्त्र - तुलसी राम देवांगन।

2- संगीत रत्नाकर (भाग-2), कल्लिनाथ

3- राग दर्पण (द्वितीय अध्याय), फकिरूल्ला

4- भैरव के प्रकार प्रथम संस्करण 1991 जय सुखलाल त्रिभुवन शाह 'विनय'

5- संगीत की पारिभाषिक शब्दावली - डा0जतिन्द्र सिंह खन्ना

6- संगीत विशरद - बसंत

7- हिन्दुस्तानी संगीत में सारंगी , कान्हड़ा और मलहार- प्रेमलता नाहर

8-हिंदुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास- सुनंदा पाठक

9-भैरव के प्रकार- जयसुख लाल (विनय)